नुक्कड़ नाटकः मातृ शक्ति–राष्ट्र शक्ति

लेखकः आतमजीत सिंह
मो0– 9335313104, 7007508488

वन्दना

जय जय जय हो जग जननी मां
जय जय जय हो जग जननी मां
जन्म दायनी जगत पालनी
जय जय जय हो जग जननी मां
मातृ भक्ति ही ईश भक्ति है
मातृ शक्ति ही राष्ट्र शक्ति है
जन्म दात्री पालनहारी
तेरी रचना की बलिहारी
जय जय जय हो जग जननी मां
जय जय जय हो जग जननी मां

सूत्रधारः– शोरोगुल को बन्द कर इधर दीजिए ध्यान
देखें आंखें खोलकर, सुने लगाकर कान
सुने लगाकर कान घर में इक बेटा है आया
मात–पिता ने जन्म दिया, पढ़ाया और लिखाया
पढ़ लिखकर जब बड़ा हुआ तो 25 पर है ब्याह रचाया
22 वर्ष की सलोनी बहू देखो घर में आई
सारे गांव में भरपूर उल्लास है छाया
प्रभु कृपा से आज ब्याह का शुभ दिन देखो आया

नाचने वालेः– बन्ना घोड़ी पे आया द्वार मैं जाऊं बलिहारी

बन्ना घोड़ी पे आया द्वार मैं जाऊं बलिहारी

बन्ने की टोपी झालर वाली

बन्ने की सासू बड़ी निराली

ससुरा है थानेदार, मैं जाऊं बलिहारी

बन्ना घोड़ी पे आया द्वार मैं जाऊं बलिहारी

मांः– लो जी मुंह मीठा करो जी, लड्डू खाओ लड्डू

कोरसः– लड्डू ?

मांः– हां लड्डू, लड्डू देसी घी के, मोतीचूर के ये लो और लो

कोरस 1ः– चाची मुंह भरा है और ठूसे दे रही हो ?

मांः– जी भर के खाओ चाहे जितना खाओ। लड्डन की शादी में नहीं खाओगे तो कब खाओगे। अरे भाई इधर कचौड़ी भी लाओ। सबको पेट भर खिलाओ। बेटे की शादी है। आज नहीं खाओगे तो कब खाओगे.....। ये लो.....और लो.....।

कोरस 2ः– बस।बस। मौसी अब और नहीं। पेट भर गया। बस बहुत हो गया। मौसी हां अब बस।

कोरस 1ः– मौसी अब चलते हैं (मुंह में लड्डू हैं) हां साल के अन्दर–अन्दर अपने पोते यानी कि लड्डन के बेटे की खबर देना, तब खायेंगे लड्डू जी भर के।

कोरस 2ः– हां इस काम में देरी नहीं होनी चाहिए। क्यों मौसी ?

मौसीः– तीन वर्ष तक बच्चे की कोई जल्दी नहीं, लड्डन की बहु सलामत रहे। भगवान राजी–खुशी रखे, आगे बंसी वाले की मर्जी। पोता हो या पोती तुम लोगों के लड्डू पक्के। देख लेना देसी घी से बने मोतीचूर के लड्डू सारे गांव में बंटवाऊंगी।

सूत्रधारः– पंख लगाकर उड़ गया समय बहुत बलवंत
मौसी के घर देखिये, आज मने सिलवंत

बधाई सब महिलायें आंगन में गा रहीं

लड्डन की बहू मन ही मन शरमा रही

कोरस 1ः– मौसी आज औरतों की इतनी चहल–पहल क्यों हो रही है तुम्हारे घर में क्या बात है ?

मौसीः– मूर्खानन्दन आज मेरे घर सिलवंत यानी सतवांसा है। लड्डन की बहु उम्मीद से है। इसलिए गांव भर की औरतें बधाई गाकर मेरा आंगन सजा रही हैं। तीन दिन पहले चने भिगो दिए थे। ये इत्ते बड़े अंकुर आ गये हैं आज।

कोरस 1ः– तो मौसी हमारे लड्डू ?

मौसीः– भाग बेवकूफ। लड्डू अभी कहां, अभी तो आज यहां औरतों का काम है। लड्डू के काम में अभी महीना है। चल भाग मूर्ख कहीं का। आज सिर्फ अंकुरित चने बंटेंगे और वो भी घर आई औरतों को। क्या समझे ?

गीत

नैहर ते आई पियरिया

पियरिया छापे पुतरा–पुतरिया बड़ी सुन्दर हो।

रामा पहिन पियरिया धना ठाढी

सुरूजवा की वारी, घुमिरि पैया लागै हो।।

आई दुअरिया से सासू, कोठरी ते जेठनिया,

अचरा मा अछत–दूब औ लिहे

सिल–लोढा, सुरूज पैंया लागै हो।

सुरजा हम पर होहु दयाल,

गोदिया भरौ लाल, अंगना बिच खेले हो।।

तौ झुकि पैंया लागै हो।

मैया दियो पूरा आशिरबाद,

जेठानी गावौ मंगल, तौ बच्चा खेलै आंगन।।

आठ महीना नौ लागे, तौ होरिला जनम लिया,

बाजा लागे बाजन हो।

रामा ससुरे ते छोटकी ननदिया, बधइया लैके आई,

सखियां गावै सोहर हो।।

कोरस 1:– मौसी सिलवंत तो मना लिया पर बहू की आगे की देख–रेख कैसे करनी है। इसकी जानकारी भी ली है।

मौसी:– अरे हमने भी बच्चे जने हैं, हमें सब पता है।

कोरस 2:– मौसी पता तो सब होता है लेकिन कहीं चूक न हो जाये इसके लिए गांव की आशा बहू से मिलना बहुत जरूरी है।

मौसी:– हमका बच्चा समझे हो क्या ? आशा बहू से पूछ कर ही सारे काम हो रहे हैं। लड्डन की बहू पहली बार मॉ बन रही है इसलिए प्रधानमंत्री मातृ वंदन योजना का पूरा लाभ आशा बहू लड्डन की बहू को दिलवा रही है।

गीत

जय जय जय हो जग जननी मां

जय जय जय हो जग जननी मां

जन्म दायनी जगत पालनी

जय जय जय हो जग जननी मां

मातृ भक्ति ही ईश भक्ति है

मातृ शक्ति ही राष्ट्र शक्ति है

जन्म दात्री पालनहारी

तेरी रचना की बलिहारी

जय जय जय हो जग जननी मां

जय जय जय हो जग जननी मां